eISSN 3049-2610

RESEARCH STREAM

A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal

Volume 02, Issue 01, April 2025

ज्योतिषशास्त्रीय में शक्ति-स्वरूप-नारी-विमर्श

डॉ0 आकाश[1]

[1]पीएच0 डी0, ज्योतिष विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय, संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली

Received: 01 April 2025 Accepted & Reviewed: 05 April 2025, Published: 30 April 2025

Abstract

ज्योतिषशास्त्र भारतीय संस्कृति और दर्शन का एक महत्वपूर्ण आयाम है, जिसमें नारी को शक्ति-स्वरूप के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। नारी के विभिन्न स्वरूप – यथा शक्ति, लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा आदि – ज्योतिषीय प्रतीकों और ग्रहों से जुड़े हुए हैं, जो उसके अद्वितीय शक्ति-स्वरूप को प्रकट करते हैं। इस विमर्श में यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार नारी ज्योतिषशास्त्र में ब्रह्मांडीय और सामाजिक शक्ति का प्रतीक मानी जाती है। साथ ही, यह शोध नारी की भूमिका और उसकी स्थिति को ज्योतिषीय दृष्टिकोण से देखने का प्रयास करता है, जिससे एक समावेशी और सशक्त नारी विमर्श उभरता है। आधुनिक नारी विमर्श और शक्ति सिद्धांतों के आलोक में इस अध्ययन में ज्योतिषशास्त्र की प्राचीन धारणाओं और आधुनिक व्याख्याओं का समन्वय किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि नारी केवल सामाजिक संरचना की अंग नहीं है, अपितु ब्रह्मांडीय शक्ति और चेतना की भी वाहक है।

मुख्य शब्द- ज्योतिषशास्त्र, शक्ति-स्वरूप, नारी विमर्श, ब्रह्मांडीय शक्ति, सामाजिक संरचना, स्त्री चेतना, देवी अवधारणा, भारतीय दर्शन

Introduction

भारतीय संस्कृति के निर्माण में महर्षियों के चिन्तन का योगदान सर्वोपरि है। इसी आलोक में महर्षियों ने प्रकृति में एक ऐसी शक्ति का दर्शन किया, जिससे अनुप्राणित होकर एक प्रक्रिया में भौतिक व्यापार निरन्तर घटित होता रहता है और होता रहेगा। विद्वानों ने महर्षियों के इस दर्शन को प्रकृति का मानवीकरण कहा है। संसार का सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद, प्रकृति के मानवीकरण का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इस दस्तावेज में मानव-चिन्तन की प्रारम्भिक अवस्था और उसकी विकासोन्मुखी प्रतिभा का सर्वोत्तम परिचय उपलब्ध होता है। सृष्टि की रहस्यमयी प्रक्रिया की व्याख्या वेद की विभिन्न विद्याओं के रूप में उपलब्ध होती है। इन विद्याओं का अपरिमित विस्तार है। इन विद्याओं के अन्तर्गत सृष्टि-नविद्या में भौतिक पदार्थों का मूल उत्पादन क्रियाशक्ति मानी गई है। आध्यात्मिक भाषा में यह शक्ति प्राण है तथा भौतिक भाषा में उसे देव शब्द से भी कहा गया है। जो जो वस्तुएँ उत्पन्न होती है वे इन्हीं देवताओं के परिणामस्वरूप है। इन्हें परस्पर भाव से देव भी कहा गया है। अनन्त कोटि ब्रहमाण्ड-विस्तृत सम्पूर्ण प्रपच के मूल में शक्ति एक ही है-

'आनीदवाप्तं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परं किञ्वनास । एकं वा इदं विबभूव सर्वम्। ऋग्वेद

'सदेव सौम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्। नेह ना नास्ति किञ्बन ॥ छन्दोग्य

'ते ध्यानयोगानुगता अपश्यन् देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढ़ाम् ।

यः कारणानि निखिलानि तानि कालात्मयुक्तान्यधितिष्ठत्येकः ॥'

स एको वर्णो बहुधा शक्तियोगात् वर्णाननेकान् निहितार्थे दधाति । स एको जालपानीशत ईशनीभिः एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्युर्य इमान् लोकानीशत ईशनीभिः ॥"-श्वेता. ११३

श्वेताः ३।२

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 01, April 2025

उक्त शक्ति को बल और क्रिया के रूप में भी जाना जाता है। जब वह सुप्त अवस्था में रहे कुछ करता हुआ न रहे, उस अवस्था में बल कहते हैं और जब वही कार्य करने को समुचत है, तब उसका नाम शक्ति पर जाता है। अन्त में किया-रूप होकर वह उपशान्त हो जाता है, फिर नया बल जाग्रत होता है-

तमीश्वराणां परमं महेश्वरं तं देवतानां परमं च देवतम् । पति पतीनां परमं परस्तात् विदाम देवं भुवनेशमीड्यम् ॥ न तस्य कार्य करणं च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते । परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च ॥

श्वेता, ६।७-८

उपरोक्त देव ही सृष्टि के लिए विभिन्न भावों में परिवर्तित होता है। 'एको देवः सर्वभूतेषु गूढ़ -यही सृष्टि का मूल सूत्र है। 'एकं सद्धिप्रा बहुधा भवन्ति' इस नियम के अनुसार एक ही तत्त्व विभिन्न रूपों को प्राप्त करती है। इस एक ही तत्त्व को बहुभाव को प्राप्त करना ही बृहण या ब्रह्म कहा गया है-

1. सूक्ष्माः प्रसवधर्मिण्यस्ततः प्रकृतयः सुताः । येभोऽधिकर्ता संजने क्षेत्रज्ञो ब्रह्मसंज्ञितः ॥ तासु प्रकृतिमत् सूक्ष्मम् अधिष्ठातृत्वमव्ययम् । अनुत्पाद्यं परं धाम परमाणुः परमेशयम् ॥ अक्षयश्वाप्यनाश्व अमूर्तिमूर्तिमानसी । प्रादुर्भावस्तिरोभावः स्थितिश्चैवाप्यनुग्रहः ॥ विधिरन्यैरनौपम्यः परमाणुमहेश्वरः । एतेजा एथ तमसो यः पुरस्तात् प्रकाशकः ॥ यदण्डमासीत् सौवर्णं प्रथमं त्वीपसर्गिकम् । बृहतं सर्वतोवृत्तम् ईश्वराद् व्यवजायत ।।

वायु, १०।१।२२३-२२६

5. 'अव्यक्तात् कारणात्तस्मान् मित्यात्सदसदात्मकात् । च महेश्वरः ॥ प्रधानं पुरुषाभ्यां तु जायते स पुत्रः संभवपिता जायते ब्रह्मसंज्ञितः । सृजते च पुनर्लोकान् अभिमानगुणात्मकान् ।।'

-वायु, १०३/१३६-१३७

2. 'परस्य ब्रह्मणो रूपं पुरुषः प्रथमं द्विज। व्यक्ताव्यक्ते तथैवान्ये रूपे कालस्तथा परम् ॥ प्रधानपुरुषा व्यक्तकालानां परमं हि यत् । पश्यन्ति सूरयः शुद्ध तद्विष्णोः परमं पदम् ॥

-विष्णु, १।१५-१६42

नैसर्गिकी

वैदिक तत्त्वच-ज्ञान की दृष्टि से शक्ति, ब्रह्म, प्रजापति सभी अग्नि के ही रूप है। मनु ने जिसे तमोभूत, अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कही है, उसी के धरातल पर अग्नि का जन्म होता है-

ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार,'अग्निर्हि नः प्रथमजा चतस्य ।

'ऋग्वेद १०/५/६

'अग्निः सर्वा देवता' ।

यही अग्नि समिन्धक और सम्प्रश्न है-

1. एक एवाग्निर्बहुधा समिद्धः
2. 'यो देवानां नामधा एक एव तं सम्प्रश्नं भुवना यन्त्यन्या'

अतः बृहण या स्पन्दन अग्नि के बिना नहीं होगा। उपरोक्त अवस्था में जो प्रथम क्षोभ उत्पन्न होता है, वही अग्नि का स्पन्दन है। विश्व में जितनी गतियाँ हैं, सब स्पन्दन के रूप है, वे ही प्राण है। सिकुड़ना और फैलना ही स्पन्दन का रूप है। धन से ऋण और ऋण से धन बिन्दु की ओर जाना तथा आना शक्ति का क्रम है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में तो प्राण-शशक्ति का विशेष उल्लेख मिलता है। प्रश्नोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्, ऐतरेयाण्यक के प्रथम तीन अध्याय में तथा वेदान्त- दर्शन के प्रारम्भ में ही इस तत्त्व का सारगर्भित संकेत है। बृहदारण्यकोपनिषद् के अनुसार कम्पन (स्पन्दन) होने से ही प्राण नाम से अभिहित किया गया है। प्राण ही ब्रह्माण्ड भौतिक अव्यक्त और अभिव्यक्त दोनों रूपों में विद्यमान् है-

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025
WWW.RESEARCHSTREAM.IJARMS.ORG

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 01, April 2025

1. 'अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणदपानती। व्यख्यन्महिषी दिवम्। ऋ. १०/१८९/२ ।
(ख) 'प्राणमाहुर्मातरिश्वान वातोह प्राण्ण उच्यते
प्राणो ह भूतं भव्यच्च प्राणो सर्व प्रतिष्ठितम् ॥ अथर्व, ११/४/१५
2. 'वायुः प्राणो हृदयं विश्वमस्य' मुण्डक, १/२/४
3. 'प्राणै वै समज्बनप्रसारणं । शतपम, ८१११४०१०
4. प्राणस्य प्राणमुत् चक्षुषश्च चक्षुस्त। बृहदा, ४१४११८

इस प्रकार प्राण-शक्ति के ही द्वारा अनेक प्रकार की जटिल गतियों और आवर्ती की सृष्टि होती है और पिण्ड का निर्माण होता है तथा प्रत्येक पिण्ड इसी प्राण-शक्ति के द्वारा ही मर्यादबद्ध आकार को प्राप्त करता है। प्राण-शक्ति के अभाव में कोई भी वस्तु ठहर नहीं सकती। बल और विधारण प्राण-शक्ति का ही प्रभाव है। अतः प्राण ही शक्ति का स्वरूप है जो स्पन्दनात्मक है, तथा शक्ति दो सहाकारी रूयों में प्रकट होती है जिन्हें उसके धन और ऋण कहा गया है। आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से भी इस सिद्धान्त की सम्पुष्टि हो गई है। प्रारम्भ में आधुनिक विज्ञानिकों ने ऑक्सीजन, हाइड्रोजन आदि को अ-रिवर्तननशील माना तथा मौलिक तत्त्व होने की घोषणा की। किन्तु बाद में खोज से पता चला कि इन ऑक्सीजन, हाइड्रोजन आदि के रूप में परस्पर परिर्तन है, इसलिए ये मौलिक तत्त्व नहीं है। मौलिक तत्त्व केवल दो ही है-इलेक्ट्रॉन तथा प्रोट्रॉन। इनमें प्रोट्रॉन स्थिर है और इलेक्ट्रॉन चारों ओर घूमता है, इन दोनों से ही सब तत्त्व बनते हैं। इस प्रकार गतिशील और स्थितिशील पदार्थों से ही जगत् की उत्पत्ति आधुनिक विज्ञान का भी मानना है। इसी सिद्धान्त का वर्णन वैदिक भाषा में एति च, प्रेति च किया गया है।

भारतीय नैयायिक, वैशेषिक एवं वेदान्त शास्त्रियों ने भी भौतिक कार्य-कलाप एवं विश्वत्संरचना में कारण प्राण-शक्ति का स्वरूप स्पन्दन ही माना है-

1. 'परिस्पन्द एवं भौतिकव्यापारं करोतीत्यर्थः न्यायमंजरी, आह्निक, १
2. क्रियाविशेष एवायं व्यापारी ज्ञातुरान्तरः । स्पन्दात्मक- बहिर्भूतक्रियालक्षणविलक्षणः । न्यायमंजरी, आह्निक ४
3. 'सर्व्वलोकपरिस्पन्दम्' शंकर
4. 'व्यक्त सक्रिय परिस्पन्दवत्' वाचस्पति-कौमुदी
5. 'वायोः परिस्पन्दात्मकत्वात् शंकर

प्रकृति के सूक्ष्म प्रपंचों का वर्णन जिस रूप में भारतीय आचार्यों ने किया है, वह संसार के किसी भी विद्वानों के वर्णन से श्रेष्ठ है। एक ओर भारतीय दार्शनिक आचार्यों ने प्राकृतिक व्यापारों का सैद्धान्तिक आयाम दिया, वहीं दूसरी ओर भारतीय ज्यौतिषशास्त्र के आचार्यों ने सैद्धान्तिक विवेचन के साथ-साथ मणितीय रूप प्रदान कर उनके सम्पूर्ण अंशों का वर्णन किया। इसी कारण ज्यौतिषशास्त्र के ग्रन्थों में सृष्टि का विवेचन अवश्य रहता है। प्रकृति के अणु-अणु का रहस्य ज्यौतिषशास्व में वर्णित है जिससे प्रत्येक व्यक्ति सृष्टि के रहस्य को ज्ञात कर अपने कार्यों का सम्पादन कर सके।

भारतीय ज्यौतिष्षशास्व के साहित्य का सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण करने पर ज्ञात होता है कि सृष्टिरखना में उपर्युक्त सिद्धान्त को ही स्वीकार किया गया है-

1. बासुदेवः परं ब्रहम तन्मूर्तिः पुरुषः परः । अव्यक्तो निर्गुणः शान्तः पञ्चविंशात्परोऽव्ययः ॥ प्रकृत्यन्तर्गतो देवो बहिरन्तम्व सर्वगः । सङ्कर्षणोऽपः सृष्ट्वादी तासु वीर्यमषासृजत् ॥ -सू. सि./ भूगो /१२-१३
2. त्रिपादममृतं गुह्यं पादोऽयं प्रकटोऽभवत् । सोऽहङ्कार जगत्सृष्ट्ये ब्रह्माणमसृजत्प्रभुः ॥

सुसि /भूगो /२०आदि तत्त्व शक्ति अर्थात् ब्रहम का स्थान एवं ग्रह की उत्पत्तिके सम्बन्ध में उल्लेख इस प्रकार

1. 'तस्मै वेदान्वरान्दत्त्वा सर्वलोकपितामहम् ।

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025
WWW.RESEARCHSTREAM.IJARMS.ORG

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 01, April 2025

प्रतिष्ठाप्याण्डमध्येऽच स्वयं पर्येति भावयन् अथ सृष्ट्यां मनश्चक्रे ब्रह्महङ्कारमूर्तिभूत् ।
मनसश्वन्ग जज्ञे सूर्योऽक्ष्णोस्तेजसां निधिः ॥
मनसः वं ततो वायुरग्निरापो धरा क्रमात् ।
गुणैकवृद्धया पञ्चैव महाभूतानि जज्ञिरे ॥
अग्नियोमी भानुचन्द्रौ ततस्त्वङ्गारकादयः ।
तेजोभूरवाम्बुवातेभ्यः क्रमशः पास जज्ञिरे ॥
न्यू सि/गोला. २१-२४०

2. ‘पस्मात् क्षुब्धप्रकृतिपुरुषाभ्यां महानस्य गर्ने – अहंकारोऽभूत् खकशिचिजलोर्व्यस्ततः संहतेश्च । शश्वज्जयति परमं ब्रहा तत्तत्वमाद्यम् ॥ भूमे पिण्डः शशांकजकविरविकुजेज्यार्किनक्षत्रकक्षा- वृतैवृतोवृतः सन्मृदनिलसलिलव्योमतेजोमयोऽयम् ॥
-सि. शि. /गोला /१-१

“ईशावास्यमिदं सर्व पत्किञ्च जगत्यां जगत् के सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए भारतीय ज्योतिषशास्त्र के आचार्यों ने ग्रहादिकों के गति के कारण सूत्रात्मा वायु के सात शाखाओं को ही माना है-
भूवापुरावह इह प्रवहस्तदू स्यादुद्वग्रस्तदनु संबसं ।
अन्यस्ततोऽपि सुबहः परिपूर्वकोऽस्माद्वाह्यः परावह इमे पचनाः प्रसिद्धाः ॥ सि. सिः। गोता।

सौरमण्डल के शक्ति केन्द्र का नाम उच्च है। भारतीय ज्यौतिषशास्त्र में इसी शक्तिकेन्द्र को देवता कहा गया है। इसी उच्चदेव से तथा आकाश एवं वायु के समवाय सम्बन्धों से ग्रहपिण्ड आकाश में भित्र-भित्र गतियों से चलते हैं-
अदृश्यरूपाः कालस्त्य मूर्तयो भगणाश्रिताः ॥
शीघ्रमन्दोव्वपाताच्या ग्रहाणां गतिहेतवः ॥
तद्वातरश्मिभिर्वद्धास्तैः सब्बेतरपाणिभिः ।
प्राक् पश्चावपकृष्यन्ते पचासत्वदिश्मुखम् ॥
प्रवहाच्यो सस्तांस्तु स्वोच्वाभिमुखमीरयेत् ।ज्यौतिषशास्त्रीय शक्ति स्वरूप-विमर्श
पूर्वापरापकृष्टास्ते गतिं पान्ति पृथग्विधाम् ॥
सू सिः। स्पष्टाः ११-३

शक्तिकेन्द्र से दूरी के अनुसार उच्च तया नीच की कल्पना की गई है-
‘कुमध्यती दूरतरे प्रदेशे रेखायुते तुंगमिह प्रकल्प्यम्। नीचं तथाऽऽसन्नतरेऽच
सि. शिः। छेद्यका/२५

ग्रहों के पिण्डमान और दूरी के अनुसार शक्तिका प्रभाव दृष्टिगोचर होता है-
‘महत्वान्मण्डलस्यार्कः स्वत्यमेवापकृष्यते । मचलाल्पतया चन्द्रस्ततो बह्वपकृष्यते ॥ भौमादयोऽल्पमूर्तित्वाच्छीघ्रमन्दोच्च संज्ञकः । देवतैरपकृष्यन्ते सुदूरमतिवेगिताः ॥ अतो बनणं सुमहतेषां गतिवशाद्भवेत् । आकृष्यमाणास्तैरेवं व्योम्नि यान्त्यनिलाहताः ॥‘
-तू. सि. । स्पष्टाः १९-११

अतः ग्रह उक्त स्थितिवश आठ प्रकार की गतियों को प्राप्त करते है
‘वक्रानुषका कुटिला मन्दा मन्दतरा समा । तथा शीघ्रतरा शीघ्रा ग्रहाणामष्टधा गतिः ॥
-सू. सिः । स्पष्टाः । १२

EISSN 3049-2610
© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025
WWW.RESEARCHSTREAM.IJARMS.ORG

eISSN 3049-2610

RESEARCH STREAM

A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal

Volume 02, Issue 01, April 2025

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्राचीन काल में ज्ञान-विज्ञान के सम्बन्ध में जितनी खोज की गई थी, वह पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है। इसी के आधार पर, आज का विज्ञान, चमत्कारी आविष्कार कर रहा है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि अरस्तु ने भी स्वीकार किया कि भौतिक व्यापार की गति चिरस्थायी और चिरन्तर है। इसका न आदि है न अन्त। इस गत्ति के पीछे अचल चालक है जो अदृश्य है, किन्तु एकमात्र सत्य है। यह अदृश्य सर्व-शक्तिमान् है, जो विश्व को निरन्तर घुमा रहा है।

Reference List-

1. बृहत् पाराशर होरा शास्त्र – महर्षि पाराशर
2. जातक पारिजात – व्रिद्धयवनाचार्य
3. फलकथामृतम् – श्रीमती रामदत्त
4. बृहत् संहिता – वराहमिहिर
5. लघु पाराशरी – पराशर
6. देवीमहात्म्यम् (दुर्गा सप्तशती) – मार्कण्डेय पुराण से
7. ललिता सहस्रनाम – ब्रह्माण्ड पुराण
8. शिव पुराण – नारी-शक्ति का व्यापक चित्रण
9. काली पुराण – शक्ति की विविध रूपों की चर्चा
10. "नारी विमर्श और शक्ति चेतना" – डॉ. नीलिमा टिक्कू
11. "भारतीय नारी और शक्ति स्वरूप" – डॉ. आशा सिंह
12. "स्त्री विमर्श और शक्ति" – प्रो. कविता शर्मा

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025